



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Karka Sankranti 2025 | जानें इसका महत्व, पूजन विधि और दान का पुण्य | PDF

भारतीय संस्कृति में सूर्य संक्रांति का विशेष महत्व है। संक्रांति का अर्थ होता है – "सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना"। जब सूर्य मिथुन राशि को छोड़कर कर्क राशि में प्रवेश करता है, तो इसे *कर्क संक्रांति* कहा जाता है। यह घटना हर वर्ष लगभग **16 जुलाई** को होती है। यह दिन धार्मिक, ज्योतिषीय, और प्राकृतिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। खासतौर पर उत्तर भारत, पूर्वोत्तर भारत और नेपाल में यह दिन अनेक परंपराओं और आस्थाओं के साथ मनाया जाता है।

कर्क संक्रांति क्या है?

कर्क संक्रांति वह खगोलीय घटना है जब सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायण की ओर गमन करता है। अर्थात् सूर्य का कर्क रेखा को पार करके दक्षिण दिशा की ओर झुकाव प्रारंभ हो जाता है। यह दिन दक्षिणायन की शुरुआत को सूचित करता है। इसी कारण इसे "दक्षिणायन संक्रांति" भी कहा जाता है।

संक्रांति शब्द दो शब्दों से बना है – *सं* अर्थात् पूर्णता और *क्रांति* अर्थात् परिवर्तन। जब सूर्य अपनी राशि को परिवर्तित करता है, तब वह संक्रांति कहलाती है।



कर्क संक्रांति का ज्योतिषीय महत्व

- **राशि परिवर्तन:**

सूर्य का कर्क राशि में प्रवेश करना एक बड़ी ज्योतिषीय घटना मानी जाती है। यह संकेत देता है कि अब दिन छोटे और रातें लंबी होंगी।

- **दक्षिणायन का आरंभ:**

हिंदू धर्म में सूर्य के दक्षिणायन होने को *देव शयन* कहा गया है। इस काल में भगवान विष्णु योग निद्रा में चले जाते हैं और सभी शुभ कार्य वर्जित माने जाते हैं।

- **पितृ कार्यों का काल:**

कर्क संक्रांति से पितरों से जुड़े कार्य आरंभ किए जाते हैं, जैसे श्राद्ध, दान-पुण्य और तर्पण।

धार्मिक महत्व

- **देव शयन काल की शुरुआत:**

इस दिन से *चातुर्मास* भी आरंभ होता है, जो चार महीनों तक चलता है। चातुर्मास में भगवान विष्णु योगनिद्रा में चले जाते हैं, और यह काल तपस्या, संयम, ध्यान और नियमों के पालन का माना जाता है।

- **दान-पुण्य का विशेष महत्व:**

इस दिन गंगा स्नान, तीर्थ यात्रा, ब्राह्मण भोजन, वस्त्र और अन्न का दान करना विशेष पुण्यदायी होता है। माना जाता है कि इस दिन किया गया दान कई गुना फल देता है।



• व्रत और उपवास:

बहुत से श्रद्धालु इस दिन व्रत रखते हैं और सूर्य देव की उपासना करते हैं। सूर्योदय से पूर्व स्नान कर के सूर्य को अर्घ्य देने से पापों का नाश होता है।

कर्क संक्रांति के दिन क्या किया जाता है?

1. गंगा स्नान और तीर्थ स्नान

कर्क संक्रांति पर विशेष रूप से तीर्थस्थलों में स्नान का विधान है। विशेषकर गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा आदि पवित्र नदियों में स्नान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है। स्नान के बाद सूर्य देव को जल अर्पित करते हुए "ॐ सूर्याय नमः" मंत्र का जाप किया जाता है।

2. पूजा-पाठ और हवन

इस दिन घरों में विशेष पूजा की जाती है। भगवान विष्णु और सूर्य देव की आराधना होती है। कुछ लोग हवन भी करते हैं और गीता पाठ, विष्णु सहस्रनाम आदि का पाठ करते हैं।

3. व्रत और नियम

कई श्रद्धालु इस दिन व्रत रखते हैं। व्रत में निर्जल रहकर या फलाहार कर के दिन बिताया जाता है। संयमित आहार, सत्संग, और दान का महत्व बताया गया है।

4. दान करना

कर्क संक्रांति पर विशेष दान का महत्व है। विशेष रूप से अन्न, वस्त्र, छाता, जल से भरे घड़े, तांबा, घी, तेल, फल, और दक्षिणा का दान शुभ माना गया है। ब्राह्मण भोजन भी कराया जाता है।



5. गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा

इस दिन सेवा करना अत्यंत पुण्यदायी होता है। गरीबों को भोजन कराना, असहाय लोगों को वस्त्र दान देना, पक्षियों को दाना-पानी देना आदि कार्य किए जाते हैं।

कर्क संक्रांति से जुड़े प्रमुख पर्व और स्थान

भारत के विभिन्न राज्यों में कर्क संक्रांति को अलग-अलग परंपराओं के साथ मनाया जाता है:

- **उत्तर भारत** में इसे *श्रावणी संक्रांति* कहा जाता है और व्रत-दान किए जाते हैं।
- **नेपाल** में यह दिन *सिंह संक्रांति* नाम से मनाया जाता है।
- **उत्तराखंड** में इसे *हरेला पर्व* के रूप में मनाया जाता है, जो हरियाली और फसलों का प्रतीक है।
- **गुजरात और महाराष्ट्र** में भी विशेष धार्मिक आयोजन होते हैं।

कर्क संक्रांति से जुड़े कुछ विशेष नियम और मान्यताएं

- इस दिन बाल कटवाना, नाखून काटना या नये वस्त्र पहनना वर्जित माना गया है।
- व्रत रखने वाले व्यक्ति को पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।
- इस दिन किसी प्रकार का तामसी भोजन नहीं करना चाहिए — जैसे मांस, मदिरा, लहसुन, प्याज आदि।
- क्रोध, ईर्ष्या और वाणी पर संयम रखना आवश्यक है।



कर्क संक्रांति पर ध्यान देने योग्य बातें

- यह दिन साधना, ध्यान और आत्मनिरीक्षण का है।
- परिवार के साथ समय बिताकर आध्यात्मिक कार्यों में सम्मिलित होना चाहिए।
- इस दिन किसी की सहायता करना, छोटे-से-छोटे दान का भाव भी श्रेष्ठ माना गया है।

कर्क संक्रांति केवल खगोलीय परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना का भी पर्व है। यह दिन हमें *ध्यान, दान, संयम, और सेवा* की भावना सिखाता है। सूर्य जब कर्क राशि में प्रवेश करता है, तो वह एक नये अध्याय का संकेत देता है — जहां हमें अपने जीवन में सकारात्मकता, संतुलन और शांति लाने का प्रयास करना चाहिए।

कर्क संक्रांति हमें यह भी सिखाती है कि जैसे सूर्य अपनी दिशा बदलता है, वैसे ही हमें भी समय-समय पर आत्ममंथन कर के जीवन में सुधार की दिशा अपनानी चाहिए।

Related Articles



[Vrischika Sankranti](#)



[Meena Sankranti](#)

THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com



Follow us on:

